International Journal for Multidisciplinary Research
International Conference on Multidisciplinary Research & Studies 2023
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

अमृत पर्व मे षक्तिषाली भारत और युवाओं कि भूमिका

डॉ. रामचंद्र एच. बुटले

राज्यषास्त्र विभाग प्रमुख,कला व वाणिज्य महाविद्यालय, बोरी अरब ता. दारव्हा, जि.यवतमाळ

सारांश:

भारत 2022 मे आजादी का अमृत पर्व मनाने जा रहा है । देश इस वर्ष से अमृत महोत्सव मना रहा है करना शुरु कर दिया है । इस उपलक्ष्य मे भारत के महानता का इतिहास और वर्तमान युवाओ की भारत प्रति भूमिकाओं आलोचना प्रस्तुत शोधनिबंध मे किया गया है । भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानो और बलिदानें से प्राप्त हुई है । तो आगे आओ स्वतंत्रता अधिक महत्वपूर्ण है । नई पिढी भले ही इसकी कीमत नही जानती हो, लेकिन उन्हें इसे जानना चाहिए इसे करने की जरुरत है । इसे साहित्य के माध्यम से किया जाना चाहीये है जो आज भी जीवित है । सीधे स्वतंत्रता संग्राम मे भाग लेने वाल बहुत कम लोग आज जीवित है । फिर भी आजादी का गौरवशाली इतिहास किसी से छुपा नही है ऐसा करने के लिय लाखो लोगों को समय-समय पर खून बहाना पडा है । अंग्रेजो के अत्याचारो से, शहरों मे आतंक और जबरदस्ती के कई किस्से है । जिंदा लोग आज हमारे पास बहुत कम है जिन्होने इसका अनुभव किया है । भारत की हजारो वर्षाे की समृध्द परंपरा रही है । नई पीढी के लिए यह इतिहास सूचित करना आवश्यक है । सदियों से भारत की इस गौरवशाली परंपरा की कायम रखने के लिए जिम्मेदारी अब युवाओं को लेनी चाहीये क्योके यह युवाओं का देश है । इन्ही के कंधो पर भारत का भविष्य निर्भर करता है । ऐसे मे युवा पीढी को भारत के अतीत के गौरव से अवगत कराना जरुरी है ।

1. प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करना ।
2. संस्थागत विलय की समीक्षा करना ।
3. युवाओं के योगदान की समीक्षा करना ।

यह तीनो मुद्दो का विश्लेषण प्रस्तुत शोध निबंध के माध्यम से दिया गया है ।

प्रस्तावना:

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत के अमृत उत्सव को बडे पैमाने पर मनाने के लिए तैयार है । इसका उद्देश नई पीढी को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जागरुक करना है । इस वर्ष ऐतिहासिक दांडी यात्रा की 90 वी वर्षगाठ है । इसे नमक सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे इस घटना का विशेष महत्व है । गांधीजी की अहिसंक आंदोलन के आगे ब्रिटिश साम्राज्य को झुकना पडा । एक या एक से अधिक ऐसे आंदोलन इस अवधि का नेतृत्व गांधीजी ने किया था । तिलक के बाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अगर किसी ने इसे सफलतापूर्वक प्रबंधित किया है, तो वह गांधी जी है । बिखरी हुई जनता को उन्होने एक सुत्रता मे लाया, सत्य और अहिंसा के एक सुत्र मे बांधा । बिना खून बहाए क्रांति हो सकती हे उनके आंदोलन से साबित होता है । आज भारत को दुनिया के सबसे बडे लोकतंत्र के रुप मे जाना जाता है । 140 करोड आबादी वाले देश मे 121 भाषाएं और 270 मातृभाषाएं बोली जाती है । हमारे देश मे 461 जनजातियाँ है जो अधिकारिक धर्म है । भाषा, संस्कृति, धर्म, रीति-रिवाज विविधता के बावजुद भारत आज एक है । इसलिए सांस्कृतिक विविधता यह एक त्योहार है, हमारे प्रधानमंत्री गर्व से कहते है स्वतंत्रता का अमृत पर्व मनाना उसी समय, प्रधानमंत्री द्वारा घोषित 'एक भारत, महान भारत' की अवधारणा नही भूल सकता।

31 अक्टूबर 2015 को सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा प्रधानमंत्री ने अपने जन्मदिन पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाते हुए इस पहल की घोषणा की गयी । सांस्कृतिक, साहित्यिक, भाषा, खान-पान, त्योहारों, उनके स्नेह और एकता के माध्यम से एक दूसरे से जुडकर स्थापित करने की पहल घटक राज्य के अन्य घटक राज्य के साथ या एक घटक राज्य के किसी अन्य केंद्र शासित प्रदेश के साथ एक वर्ष के लिए क्षेत्र के साथ जुडना और विभिन्न स्तरों पर उनके बीच कार्यक्रमों का आदान-प्रदान करना इसका उद्देश्य वन इंडिया, ग्रेट इंडिया की अवधारणा को बढावा देना है ।

स्वतंत्रता का अमृत पर्व मनाते हुए प्राचीन भारत के उज्ज्वल प्राचीन इतिहास का पुनरीक्षण भी व्यवस्थित हो जाता है । 2500 साल से भारत का लिखित इतिहास उपलब्ध है । पुरातत्व विभाग के शोध के अनुसार भारत को लगभग सŸार हजार वर्ष हो गए है मानव अस्तित्व का प्रमाण है । भारत का इतिहास शक्तिशाली है और गौरवशाली रह गया है । प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक कई राज भारत ने अनुभव किया है । इसमे मौर्य साम्राज्य का उल्लेख अवश्यंभावी है । भारत की इसे पहली प्रभावी केंद्र सरकार के रुप मे जाना जाता है । कल्याणकारी सरकार के रुप मे पहचान की जा रही थी । तत्कालीन महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के अलावा सातवाहन वंश का भी उल्लेख आवश्यक है । इस अवधि के दौरान, भारत वास्तव मे एकजुट था । लगभग नौ से दस हजार साल पहले भारत मे ग्रामीण और शहरी मानव बस्तियां थी । समाज विकसित होने लगा था । सिंधु नदी के तट पर विकसित सभी सिंधु संस्कृति के साथ परिचित है । मोहनजोदडो और हडप्पा भारत के दो उत्खनित शहर है । प्राचीन सभ्य संस्कृति की गवाही देते है आज भले ही ये शहर पाकिस्तान मे है लेकीन यह भारत को समृध्द रखने के लिए प्रसिध्द है ।

बाद मे, युरोप और मध्य एशिया के आर्य जनजातियों द्वारा सिंध्दू संस्कृति को नष्ट कर दिया गया। वैदिक संस्कृति का उदय भारत मे हुआ । जो गंगा घाटी मे अधिक प्रचलित हे । ग्रीस सम्राट सिकंदर के आक्रमण के बाद भारत का अधिकांश भाग जीत लिया गया । उसने विभिन्न स्थानो पर अपने सुबेदारों की नियुक्ति की । इसके बाद मोहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनीने आक्रमण किया । समय के साथ निजामशाही, आदिलशाही और कुतुबशाही उभरा । बाद मे छत्रपती शिवाजी महाराज ने मराठा साम्राज्य के माध्यम से लोगो पर शासन किया । पेशवा काल के दौरान नजरबंदी के दौरान फरार हो जाने का एक इतिहास है । लेकिन पानीपत के तीसरे युध्द के बाद पेशवाओ का पतन हो गया और मराठा साम्राज्य पर ग्रहण लग गया । सैध्दांतिक रुप से यूरोपीय साम्राज्यवाद का उदय हुआ ब्रिटिश, फ्रेंच, पुर्तगाली और डच के रुप मे

भारत ने उपनिवेशवाद का अनुभव किया:

समय के साथ, स्वतंत्रता आंदोलन तेज हो गया । कई राष्ट्रीय नेताओं के साथ भारतीयों मे जगमगाता 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिली । आर्थिक और सामाजिक सुधारो को स्वीकार करते हुए स्वतंत्र भारत की यात्रा शुरु हुई । जब यह चल रहा था, भारत 80 के दशक मे जम्मू-कश्मीर मे अनुभवी हिंसा, इसके अलावा पूर्वाेŸार असम, मणिपूर, मिजोरम, नागालैंड मे हिंसा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, पंजाब मे नक्सलवाद, आतंकवाद ने देश के लिए एक बडा संकट खडा कर दिया है । संकट अभी खत्म नही हुआ है । ये मुद्दे भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर है । और राष्ट्र की एकता मे भी बाधा है । इस संबंध मे एक और बात ध्यान देने योग्य है वो है पूरा भारत सृजन का । आज के अखंड भारत की नींव सरदार पटेल ने रखी । स्वतंत्रता के समय भारत मे 562 उपनिवेशवादी थे । जिसका कुल क्षेत्रफल भारत का 40 प्रतिशत था । उन सभी को स्वतंत्र अस्तिव देना संभाव नही था । यदि हां, तो कई देश टुकडो में बटने का डर था । तो पटेल ने सबको समझाया । इस अवसर पर श्रध्दा, सबुरी ने संस्थाओं का विलय किया । जुनागढ, हैदराबाद और, जम्मू-कश्मीर के अधिकारियों ने पटेल की सराहना नही की । इसलिए भारतीय सेना की मदद से पटेल ने जुनागढ और हैदराबाद को भारत से जोडा । जम्मू-कश्मीर पटेल ने भी संदर्भ में बल प्रयोग करने का निर्णय लिया, लेकिन नेहरु ने संयुक्त राष्ट्र के समक्ष इस मुद्दे को उठाया तबसे से यह मुद्दा विवादो मे रहा है । पटेल की दमदार भ्ूमिका के कारण आज हम अखंड भारत देखते है । इस लीये अगर कोई अखंड भारत का सच्चा मूर्तिकार है तो वह पटेल है । इसमे कोई नाराजगी

नही होनी चाहिए । भारत को स्वतंत्रता देकर जैसा कि कई व्यक्तित्वो का योगदान दिया गया है । इसी तरह आजादी के बाद भारत के एकीकरण मे कई लोगों का योगदान भी रहा है । इसलिए भारत की अखंडता, यह ध्यान रखना जरुरी है कि एकता से समझोता न हो । यह जिम्मेदारी सिर्फ लोगों कि है, यह हम सबकी है, सरकार की ही नही । वास्तव मे, युवाओ की अधिक है । क्योकि भारत को युवाओं का देश कहा जाता है । भारत की जनसंख्या का 35: यह युवाओं के अंतर्गत आता है । यही युवा शक्ती भारत का उज्ज्वल भविष्य है । लेकिन यही आज की युवा शक्ती है आप अपने उद्देश्य से भटकते हुए देखते है । ड्रग्स और भारत में समान नशा करने वालों की संख्या मे जबरदस्त इजाफा हुआ है । बेरोजगारी उसी दर से बढ रही है अपराध बढ रहा है । चोरी, अपहरणे, डकैती और बलात्कार जैसे अपराधो मे युवक भागीदारी बढ रही है । स्वतंत्रता जब भारतीय युवा ऐसी अवस्था मे हो हम अमृत महोत्सव मनाने जा रहे है । देश का नेतृत्व करने वाले युवा यह उन युवाओं की तस्वीर है जिन्हे कंधे पर बैठकर पीना है । वर्तमान मे युवाओ को समूहो, जातियों और धर्मा े और विशेष रुप से पार्टीयों मे विभाजित किया गया है । प्रतिशत विकास के मुद्दे पर नही बल्कि मंदिर-मस्जिद, हिंदू-मुसलमान के मुद्दे पर प्रतिबिंबित परिलक्षित होने लगता है । अलग-अलग पार्टियों की नीतियों से लेकर सोशल मीडिया के जरिए एक-दूसरे तक बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, गरीबी, महिलाओं के खिलाफ अत्याचार, हालांकि, युवा लोगों मे से है जो टुट रहे है, सन्नाटा है । संविधान को दरकिनार करना और राष्ट्रीय जांच एजेंसी को गाली देना शुरु, शासक वर्ग आसानी से युवाओं की अनदेखी कर रहा है । इतिहास का बहुसंख्यक युवाओं के ऐसे मौन उपकरण जबकि महापुरुषों का अरुपण और गबन जारी है । यह निश्चित रुप से स्वतंत्र भारत के लिए खतरे का संकेत है । दिल्ली सीमा पर पिछले डेढ साल से किसानों का आंदोल गरीब, मेहनती, आक्रोशित किसान, बेरोजगारी, कमजोर अर्थव्यवस्था, बिक्री के लिए सरकारी उद्योग, तेजी से धार्मिक ध्रुविकरण । यह सब है आजादी का अमृत महोत्सव यह त्योहार की पृष्ठभूमि मे हो रहा है । इस तस्वीर को कही न कही बदलने की जरुरत है । सार्वजनिक रुप से नियुक्त अगर सरकार अपने उद्देश्य से भटक रही है तो उन्हे बताएं कि उनका कर्तव्य क्या है? ऐसे प्रश्नों पर जोर देना युवाओं की जिम्मेदारी है । क्योकि यही भारत का उज्ज्वल भविष्य है । भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चाफेकर भाइयों जैसे युवा देशभक्तो मे ये से स्वतंत्रता संग्राम के योगदान को कभी भुलाया नही जा सकेगा । उनका रोल मॉडल आज का युवा है इसे ध्यान मे रखने की जरुरत है । यह केवल स्वतंत्रता का अमृत पर्व नही है बल्कि ऐसे ही कई अन्य पर्व है यदि ऐसा है तो युवाओ को जाति, घृणा, तिरस्कार और ईर्ष्या के चश्मे को एक तरफ रख देना चाहिए । समावेशी, अखंड और शक्तिशाली भारत का नजारा देखने की जरुरत है । मेरे विचार से यह सच्ची स्वतंत्रता का अमृत पर्व होगा ।

संदर्भ:

1. षर्मा रामषरण, भारत का प्राचीन इतिहास, ओयूपी इंडीया प्रकाषन 2018।
2. सतीषचंद्र, माध्यकालीन भारत ओरिएंट ब्लैक स्वान प्रकाषन, 2020।
3. श्रीवास्तव के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास और संस्कृती, युनाइटेड बुक डिपो प्रकाषन, 2015।
4. रघुराम राजन एन., युवा भारत की नई पहचान, प्रभात प्रकाषन, 2018।
5. द इंडियन एक्सप्रेस, डेली न्युज पेपर, 4 सितंबर 2021।